वहाबी मत का सत्य

लेखक : आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
सम्पादन : नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

आख़री (किस्त)

हज़रत का यह भी सुकथन हैः

"शैतान निराश हो चुका है कि अरब द्वीप में उसकी इबादत/भक्ति नहीं होगी।"

जिससे मक्के और मदीने का तात्पर्य हो निश्चय ही है बल्कि इब्ने असीर ने निहाया में इमाम मालिक का कथन लिखा है कि यहाँ अरब प्रायः द्वीप से खुद मदीना मुराद (अभिप्राय) है। तो अब इसके बाद यह बात कितनी अजीब व हास्यास्पद है कि जिस ज़मीन को पैग़म्बर ने शैतान का केन्द्र कहा हो वहाँ के लोग यह कहें कि केवल हम ही सच्चे मुसलमान व मोमिन हैं और जिन शहरों के लिए कहा हो कि वे ईमान का केन्द्र हैं और वहाँ शैतान निराश हो चुका है, उन्हें समझा जाए कि वे सब काफ़िर व मुशरिक हैं।

आश्चर्यजनक बात बनाने का कर्तब है कि नज्दी लोग कुरआन की आयतों और कुछ हदीसों के उन अर्थों से जो ठीक और बुद्धि–संगत कारणों पर आधारित है उन्हें कड़ाई से नकारते हैं। और वे इसपर अड़े रहते हैं कि शब्दों को उनके सामने के अर्थों पर ले जाना चाहिए लेकिन जब ये हदीसें प्रस्तुत की जाती हैं तो दुरस्व अभिप्राय से काम ले कर धाँधली करके यह बताते हैं कि इन हदीसों का इशारा नज्द की ओर नहीं बल्कि इराक़ की ओर है, इसलिए कि वह हिज़ाज़ से ज़रा ऊँचाई पर है। लेकिन भाषा, भूगोल (जियोग्राफ़ी) और अरबी काव्य सबको देखने से यह बात सच्चाई कोसों दूर लगती है। और यह भी पता चलता है 'नज्द' का शब्द अगर बिना किसी क़ैद (शर्त/बन्धन) के बोला जाए तो उसका अर्थ यही ज़मीन होता है जो हिजाज़ के पास उससे ऊँची है, इसलिए नज्द कहलाती है। और इसके उलट तिहामा है इसलिए कि वह उससे नीची है और उसे "ग़ौर" (गहराई) भी कहते हैं जो 'नज्द' (उभार) का विलोम होता है।

फिरोज़ाबादी की 'क़ामूस' में नज्द का अर्थ और उसकी सीमाएं लिखी हैं कि उसके आगे 'तिहामा' और 'यमन' है और उसके इधर उधर इराक़ और शाम है, और हिजाज़ की ओर से 'ज़ातेअरक़' से शुरू हो जाता है। और जौहरी ने 'सिहाह' में लिखा है कि नज्द अरब के शहरों में से है और वह ग़ौर के सामने है और ग़ौर का अर्थ तिहामा होता है और तिहामा से इराक़ तक बीच में जितना ऊँचा हिस्सा है, वह नज्द है। और क़य्यूमी ने नज्द के बारे में लिखा है कि नज्द मशहूर मुल्क है अरब की ज़मीन में इराक़ से मिला हुआ ओर वह हिजाज़ का भाग नहीं है, मगर अरब प्रायद्वीप में शामिल है। 'तहज़ीब' में है कि जो खाई किसरा (इरान का एक राज घराना) शासकी ने इराक़ की सीमा पर खुदवायी थी उस खाई के आगे जितना भाग है वह नज्द है, जहाँ तक हर्रा का मोड़ है। जब उस ओर मुड़ जाओ तो हिजाज़ में दाख़िल हो गये। महमूद शुकरी आलूसी ने 'तारीख़ नज्द' में नज्द की सीमांकन से लगभग 10 कथन लिखे हैं जो सबके सब यह बताते हैं इराक़ की धरती नज्द से बाहर है।

अरब के शायरों ने भी नज्द के शब्द से इसी ज़मीन को मुराद लिया है न कि इराक़ की ज़मीन को, बल्कि इराक़ का नाम नज्द के मुक़ाबले में लिया है। वह शेर हमने अपनी अरबी किताब में दर्ज किए हैं, इस उर्दू किताब में उनको लिखने से कोई फ़ायदा नहीं है।

क़ामूसुल अमकिनावल में है कि नज्द के

शहर हिजाज़ के पूरब में स्थित हैं और इनके दो भाग हैं: नज्दे हिजाज़ और नज्दे आरिज़। और इस ज़मीन से क़रामिता उठे और मुसैलिमा (झूठा नबी) वहीं से उठा और वहाबी लोग वहीं से निकले और उनकी राजधानी 'रियाज़' नामक शहर है जिसकी जनसंख्या तीस हजार है। इससे स्पष्ट है कि नज्द की ज़मीन वही है जो वहाबियों का केन्द्र है और यह हिजाज़ के पूरब में है जिसके बाद उन हदीसों के अर्थ में कोई परदा नहीं रहता। उन हदीसों में से एक हदीस और है जिसे "अहमद बिन ज़ैन दिअलान" ने "खुलासतुल कलाम" में दर्ज किया है कि: "हज़रत पैग़म्बर ने फरमाया नज्द से एक शैतान निकलेगा जिसके फितने से अरब में तहलका पड़ जाएगा।"

एक और हदीस उन्होंने दर्ज की है कि: पूरब की ओर से निकलेगे ऐसे लोग जो कुरान ऐसे पढ़ेंगे कि वो उनके गले से आगे नहीं बढ़ेगा। वो दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकलता है। उनकी ख़ास निषानी सर का मुंडाये हुए होना है।

और इसी विषय की और भी रिवायतें हैं।

खुलासतुल कलाम में इन सब रिवायतों को लिखने के बाद लिखा है कि यह जो हज़रत[स०] ने फ़रमाया कि इनकी निशानी सर का घुटवाना है यह स्पष्ट तौर पर उस गुट को ज़ाहिर कर रहा है जो पूरब से निकला और वह मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब का अनुकरण करती है। और इब्ने अब्दुल वहाब का इस पर बल था कि सिर को इस तरह घुटवाओ कि ज़रा भी बाल का निशान न रह जाए। और कोई आ जाता तो उसे उठ कर जाने नहीं दिया जाता था जब तक कि उसका सर मुण्ड न जाय। इतनी प्रतिबद्धता इस गुट से पहले किसी में भी देखि नहीं गयी। अब्दुर्रहमान मुफ़्ती ज़ुबैद का कहना था कि इब्ने अब्दुलवहाब की काट में किसी किताब के लिखने की ज़रूरत नहीं बस हज़रत[स०] की यह हदीस काफ़ी है कि अस गुट की निशानी सर का मुंडवाना है इसलिए कि किसी बिदअती गुट ने भी कभी इस पर इतना वल नहीं दिया और मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की ओर से एसा बन्धन थी कि वह औरतें तो इसकी मतावलम्बी हों उन्हें भी सर मुंडवाने का निर्देश था।

उन हदीसों में एक हमारे उच्च कोटि के मुहदिदस अल्लामा मजलिसी ने 'बिहारूल अनवार' की एक जिल्द में अबू सईद ख़ुदरी की एक रिवायत लिखी है कि:

"हज़रत अली[अ०] ने यमन से रसूलल्लाह के पास बहुत सा क़ीमती सामान भेजा तो हज़रत ने उसे चार आदमियों में बाँट दिया अक़रा बिन हाबिस ऐनीया बिन बद्र फ़ज़ाज़ी, अलक़मा बिन इलाक़ा आमिरी और ज़ैद बिन खैल ताई तो कुरैश और अन्सार (मदीने वाले सहाबी) को इसपर गुस्सा आया और वे कहने लगे कि ये नज्द के बड़े बड़े लोगों को देते हैं ओर हमें छोड़ देते हैं। आपने कहा कि मैं तो उनका दिल जीतने के लिए देता हूँ। उसके बाद एक आदमी आया जिसकी आँखें धंसी हुई थीं और माथे के दोनों ओर की हड्डियाँ ऊँची थीं, दाढ़ी घनी थी और गाल फूले हुए थे और सर मुंडा हुआ था। उसने नबी[स०] का नाम लेकर पुकारा और कहा कि अल्लाह से डरिए। आपने फ़रमाया मैं अल्लाह की अवज्ञा करूँगा तो उसकी आज्ञा पालन करने वाला कौन होगा? वह मुझ पर सारे लोगों के बारे में भरोसा किए हुए है और तुम मुझ पर भरोसा नहीं करते। मुसलमानों में से एक ने जो मेरे ख़याल में खालिद बिन वलीद थे, नबी[स०] से उसे क़त्ल (वद्ध) करने की आज्ञा मांगी तो आपने आज्ञा नहीं दी और जब वह चला गया तो आपने कहा कि उसकी असल नस्ल (संन्तान) से एक गिरोह वह होगा जिसके लोग कुरान पढ़ेंगे मगर वह उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा। वे लोग इस्लाम से यूँ निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकल जाता है। वे लोग मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और मूर्तिपूजा करने वालों को छोड़े रहेंगे। मैं अगर उनको पाऊँ तो क़त्ल करूँ इस प्रकार जैसे 'आद' कुल के किसी आदमी को क़त्ल होना चाहिए।"

दूसरी रिवायत में यह है कि किसी ने पूछा कि उनकी निशानी क्या है? तो आपने कहाः "उनकी निशानी सिर का मुंडवाना है। उसके लिए 'तहलीक़' का शब्द कहा या 'तस्मीद' का तो जब उन्हें देखना मौत की नींद का मज़ा चखाना।"

निहाया में इस हदीस के कुछ टुक्ड़ों के शब्दों के विश्लेषण में लिखा है किः

ज़ाज़ई के तायने असल नस्ल अर्थात मूल पीढ़ी (बाद की) सन्तति–क्रम सन्तान–क्रम और तस्मीद उनमें आम होगी। तस्मीद का अर्थ सर मुंडाना इस तरह कि बाल बिल्कुल न रहें। दूसरी रिवायत में है कि यह व्यक्ति ज़ुल खुवैसरा तमीमी था।

इस हदीस से दो बातें साबित होती हैं। एक यह कि नज्द वाले इस्लाम के ऐसे विरोधी थे कि उनमें से अगर कोई मुसलमान हो तो उसी प्रकार माल लेकर दिल जीतना पड़ता था जैसे मक्का विजय के बाद अबूसुफयान का और ये लोग "मुअल्लिफ़तुल कुलूब" (जिनके दिल जीत गये) कहलाते थे।

दूसरी बात यह कि जो आपने फ़रमाया कि इस (अबुल खुवैसरा तमीमी) की नस्ल से ऐसे लोग होंगे और इब्ने अब्दुल वहाब का तमीमी होना हमें पहले मालूम हो चुका है। इस लिए यह साबित हुआ कि सब निशानियाँ इस गिरोह में वही हैं जिनका रसूल ने पता दिया था। मुसलमानों का ख़ून बहाना, मूर्तिपूजा करने वालों के ख़िलाफ़ कभी तलवार न उठाना, सिरों का मुंडाना, यह सब बातें देखने में आने वाली हैं। इन्हीं से उन बातों को भी समझा जा सकता है जो आँखों से दिखाई नहीं देती जैसे क़ुरआन का गले से नीचे न उतरना, और इस्लाम से इस प्रकार निकल जाना जैसे तीर कमान से निकलता है। एसी ही और हदीसें ढूंढने से मिल सकती हैं जो नज्दी लोगों पर खरी उतरती है (उनपर फिट हो जाती है) उन्हें पैग़म्बर का एक मोजिज़ा (भविष्यवाणी, चमत्कार) भी समझना चाहिए।

सातवाँ अध्याय

आरम्भ से आजतक वहाबियों के करतूत

मालूम होना चाहिए कि यह लोग 1160 हिजरी में प्रकट हुए और जबसे सामने आए तब से मुसलमानों का ख़ून बहाते रहे। उनके उस समय के शासक/हाकिम मुहम्मद बिन मसऊद ने मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से बैयत इसी पर की थी कि वह उस मसलक (मत) के विरोधियों से युद्ध करेगा और जिहाद के नाम पर उनका ख़ून बहाएगा। तो अब ऐसे गिरोह का पूछना ही क्या कि जिसकी नींव ही मुसलमानों के ख़ून बहाने पर रखी गई हो तो जितनी जितनी राज सत्ता पक्की होती गयी खून बहाने में बढ़ोत्तरी होती गयी। ख़ून बहाने के अतिरिक्त न जाने कितनी औरतों की बेइज़्ज़ती हुई, कितनी औरतों को क़ैद करके उन्हें कनीज़ (दासी) बनाया गया। यह सब अत्याचार मुसलमानों पर हुए और अपने राज के पूरे काल होने गैर मुस्लिम में से किसी का खून गहाया।

जब नज्द के जाहिलों में उनका सिक्का बैठ गया तो उनके अन्याय और अत्याचार का क़दम आगे बढ़ा और सऊद बिन अब्दुल अज़ीज़ के दौर में कई बार ईराक़ पर आक्रमण किया। इसी से बड़े रूतबे के शिया आलिम सैयद मुहम्मद जवाद आमिली ने अपनी किताब 'मिफ़्ताहुल करामा' में कई भागों में उन अत्याचारों का आँखों देखा हाल बयान किया है। उसी समय में ये लोग हरमैन शरीफ़ैन (मक्का, मदीना) में दाखिल हुए और शरीफ़े मक्का (मक्का के महापौर) और उनमें 1205 हिजरी से लेकर 1220 हिजरी तक लगातार लड़ाई हुई जिसमें मक्के वालों की पराजय हुई और उन्होंने हरमैन शरीफ़ैन को दारूल हर्ब (लड़ाई की भूमि) कह कर वहाँ लूटमार और हत्या का बाज़ार गर्म कर दिया। नबी के हुजरे (कोठरी) में जितना माल व रत्न थे उन सबको लूट कर अपनी मन मौजी की। इन सब घटनाओं का विस्तृत विवरण 'अजाएबुल अस्र' नामक किताब में है। हालांकि इस किताब के लेखक का स्वयं

भी वहाबी मत की ओर झुकाव था। मुसलमानों को हज करने से रोक दिया गया हज के मौसम में एलान किया गया कि ए ईमान वालो मुश्रिक नजिस हैं तो वे इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास न आयें। इसका नतीजा हुआ कि 1221 हिजरी से शाम (सीरिया) व मिस्र से हाजियों का आना बन्द हो गया। इसे 'खुलासतुल कलाम' द्वारा अहमद बिन दहलान में बयान किया गया है।

और इसके बाद 1223 हिजरी में उस समय के इब्ने सऊद ने मक्के वालों से कहा कि जितने क़ुब्बे (गुम्बद) हैं वह सब गिरा दिए जाएं ओर इन 'बुतों' को नष्ट किया जाए ताकि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न हो। दूसरे ही दिन लोग फावड़े लेकर मुक़द्दस (पुण्य/पुनीत) स्थानों और गुम्बदों को गिराने के लिए रवाना हो गए। सबसे पहले जन्नतुल मुअल्ला के गुम्बद गिराए गए जो बड़ी संख्या में थे। फिर पैग़म्बर के पैदा होने के स्थान, अबूबक्र के पैदा होने के स्थान पर जनाबे ख़दीजा के मज़ार के कुब्बे गिराए गए। और उन सभी स्थानों को मिट्टी में मिलाया जो मुसलमानों में बहुत ही आदर और श्रद्धा की निगाह से देखे जाते थे। और गिराते समय यह लोग रजज़ (लड़ाई में स्वयं की तारीफ़) पढ़ रहे थे और ढोल बजा रहे थे और उस क़ब्र वाले को गालियां दे रहे थे और कह रहे थे कि यह सब वह 'बुत' हैं जो लोगों ने पूजने के लिए बनाये हैं। इन सब बातों का ज़िक्र 'खुलासतुल कलाम' नामक इतिहास की किताब (लेखकः बिन दहलान) में किया गया है।

इसी प्रकार मदीने की क़ब्रों को ढहाया गया। सिवाए नबी की क़ब्र के गुम्बद के बाक़ी सब क़ब्रों पाक स्थानों को विषेशकर 'जन्नतुल बक़ीअ' की मज़ारों को ध्वस्त कर दिया गया। उनकी यह हरकतें बराबर जारी रहीं यहाँ तक कि मिस्र की फ़ौजें आयीं और उन्होंने उनको यहाँ से निकलने पर मजबूर किया। इसके लिए बड़ी कड़ी लड़ाई हुई और नज्द की फ़ौज की पराजय हुई। 1234 हिजरी के शाबान महीने में मुहम्मद अली पाशा मिस्र के हाकिम का हुक्म नज्द में मिस्र की सेना के कमाण्डर इब्राहीम पाशा के पास पहुँचा जो 'दरईया' तक पहुँच चुके थे। वह हुक्म यह था कि वो 'दरईया' को नष्ट कर दें, इस हुक्म के बाद मिस्र की सेना ने तेज़ी के साथ इस शहर को मलियामेट कर दिया और आग लगा दी और वहाँ के निवासी सब इधर–उधर बिखर गये। मगर हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने ख़ारिजियों के लिए पहले ही यह ख़बर दी थी कि ये लोग बिल्कुल समाप्त नहीं होंगे जब उनकी एक शाखा कटेगी तो दूसरी स्वतः ही निकल आएगी। इसलिए कुछ समय बीतने पर इन लोगों ने फिर सिर उठाया।

ये लोग फिर इराक़ आए और करबला–ए–मुअल्ला में हज़ारों मोमिनों का ख़ून बहाया और हरम (क़ब्र का पूनील स्थल) का अनादर किया बिल्कुल उसी तरह जैसे यज़ीदी सेना नायक मुस्लिम बिन अक़बा ने मदीने का हाल किया था कि वहाँ पर नजासतों का ठेर लगा दिया गया था। इसके अलावा पाक ज़रीह को भी उखाड़ डाला और जो कुछ हरम का ख़ज़ाना था उसे लूट लिया। बस ये लोग नजफ़ में पैर नहीं रख सके और क़ुदरत की ओर से उन्हें पराजय हुई और बहुत सी जानें गंवा कर वे लोग निराश वापस हुए।

इसके बाद लगभग एक सदी तक ये लोग अधिक सिर नहीं उठा सके बस अपने नज्द के शहरों में ही सीमित रहे। यहाँ तक कि अंग्रेजों के कारण उन्हें आगे बढ़ने का ऐसा मौक़ा मिला कि नज्द का शासक हरमैन (मक्का, मदीना) का भी राजा हो गया। इस बार इन्होंने ऐसे जुल्म व सितम किए और अल्लाह की निशानियों की ऐसी बेइज़्ज़ती की जिससे मुसलमानों के दिलों में घाव पड़ गऐ। उस समय के अब्दुल अज़ीज़ आले सऊद ने सत्ता में आने के बाद पहले तो ताएफ़ में क़त्ले आम (नरसंहार) किया और उसके बाद "इमामुल मुफ़स्सिरीन" (कुरान के सबसे बड़े व्याख्या कार) अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास के गुम्बद को ध्वस्त किया फिर मक्के में जितने मज़ार व गुम्बद थे

उन सबको ध्वस्त किया जिनमें नबी के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब का रौज़ा था, और आपके चचा जनाबे अबूतालिब और आपकी धर्म पत्नी जनाबे ख़दीजा और आपकी माँ जनाबे आमिना बिन्ते (सुपुत्री) वहब के रौज़े भी थे, उन सबको गिरा दिया। इन महापुरूषों के अपने रूतबों और श्रेष्ठता के अलावा इस प्रकार भी देखा जाये कि इन में से ज्यादा तर लोग कुरैश कुल में बड़े महान और उत्कृष्ट महापुरूष थे जिन के बारे में खुद नज्दियों के अगुवा पूज्य धर्मगुरू और धर्मनेता इमाम अहमद बिन हंबल के मुस्नद (हदीसों के संकलन) में हदीस है कि :

''हज़रत रसूले खूदा[स०] ने फरमाया कि जिसने कुरैश की मानहानि की उसकी खुदा मान हानि करेगा।''

इसमें कोई शक नहीं कि क़ब्र का गिराना उस क़ब्र में सोने वाले का अनादर और मानहानि है। हज़रते पैग़म्बर ने एक व्यक्ति को देखा कि वह एक क़ब्र से टेक लगाये बैठा है तो आपने फ़रमाया कि क़ब्र वाले को ठेस न पहुँचाओ। बिन अबी शैबा ने अबदुल्लाह बिन मसऊद की बात बतायी कि उन्होंने कहा कि मोमिन को उसके मरने के बाद ठेस पहुँचाना ऐसा है जैसे उसके जीते जी ठेस पहुँचाना और हमें उन्होंने मोमिन को पीड़ा देने से मना किया है। हर व्यक्ति यह अन्दाज़ा कर सकता है कि यदि किसी का घर गिरा दिया जाए तो ज़िन्दगी में उसे पीड़ा होगी या नहीं? तो इसी प्रकार से अगर क़ब्र पर फावड़े चलाए जाएं तो बेशक उस मय्यत (शव) को पीड़ा होगी जिसकी वह क़ब्र है। जब यह क़ब्र वालों को पीड़ा पहुँचाना है तो अब कुरआन की यह आयत पढ़िएः "जो लोग मोमिन मर्द और मोमिन औरतें को बिना किसी जुर्म के पीड़ा दें तो उन्होंने बड़े गुनाह का बोझ उठाया।"

तायफ़ और महान मक्के में उनके ये करतूत संसार के मुसलमानों में बेचैनी पैदा करने के लिए काफ़ी ही थे कि फिर मदीनए मुनव्वरा (उज्जवल मदीना) के सभी स्मारक आसार व मज़ारों को ध्वस्त किया और जन्नतुल बक़ीअ में सारे गुम्बदों को नष्ट किया जिनमें रसूल की धर्म पत्नियों, रसूल के रिश्तेदारों, और रसूल के सहाबियों की क़ब्रें थीं जैसे उस्मान बिन मज़ऊन जिन्हें नबी ने स्वयं अपने हाथों से दफ़्न किया था और उनकी क़ब्रों को उजागर करने में विशेष प्रयत्न किया था। इसके अलावा वहाँ रसूल के पिता श्री हज़रत अब्दुल्लाह, और आप के बेटे जनाबे इब्राहीम, और आपके चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और चचा के बेटे जनाबे अक़ील और सहाबी अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सबसे बढ़कर खातूने जन्नत (स्वर्ग की परदे वाली महिला) जनाबे फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा का मुबारक पवित्र मज़ार था जहाँ बहुत से सुन्नी उलमा जैसे मोमिन बिन शिबलिन्जी 'नूरूल अबसार' में, मुहम्मद बिन सुब्बान 'इसआफ़ुल राग़ेबीन' में, अबुल अब्बास अहमद बिन यूसुफ़ दमिश्क़ी 'अखबारूददवल' और ' आसारूददवल' में और अली बिन बुरहानुददीन शाफ़ई 'इनसानुल उयून' में इब्ने अब्दुल बर्र 'किताबुल इस्तीआब' में और दूसरे लेखक हज़रत सैयदा[स०] की क़ब्र होने को मानते हैं। जिनके बारे में नबी की हदीस 'सहीह बुखारी' में मौजूद है किः "जिसने इनको तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी।" और यह हदीस पहले आ चुकी है कि जो मरने के बाद (मूर्दे को) पीड़ा दे वह एसा ही है जैसा जीते जी पीड़ा दी।

तो इसके बाद कुरान की यह आयत पढ़ना चाहिए जिसका आशय यह है किः "जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ़ पहुँचाते है, उन पर अल्लाह की लानत (फिटकार) है दुनिया और आख़िरत में और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।"

इन सबके अतिरिक्त उस गुम्बद को ध्वस्त किया जिसमें अहलेबैत के इमामों में से चार हस्तियाँः

1. इमामे हसन अलैहिस्सलाम
2. इमामे ज़ैनुल आबिदीन, अलैहिस्सलाम
3. इमामे मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम
4. इमामे जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम

ये सब दफ़्न थे जिनके फ़ज़ाएल (उत्कृष्टताएँ) अहले सुन्नत की किताबों में भी लिखी हैं। सारे मुसलमान उन का खास आदर और पुण्य करते थे। अल्लामा इब्ने हजर मक्की इमाम जाफ़रे सादिक़ के हाल में लिखते हैं किः "आप भी उस कुब्बे में दफ़्न हुए तो क्या कहना उस कुब्बे का कितना उच्च तरीन मुबारक और शरीफ़ (शुभ और श्रेष्ट) स्थान है यह।" हदीस के जानकार मुहम्मद पारसा बुखारी ने 'फस्लुल खिताब' में इमाम ज़ैनुल आबिदीन के हाल में लिखा है कि आप उस कलस के नीचे दफ़न हुए जिसमें इससे पहले रसूल के चचा अब्बास और ख़ुद आपके चचा इमाम हसन दफ़्न हो चुके थे और आपके बाद इसमें आपके बेटे मुहम्मदे बाकिर[अ०] और फिर उनके बेटे जाफ़रे सादिक़[अ०] दफ़्न है तो क्या कहना उस कुब्बे का कि कितना महान और श्रेय वाला यह कुब्बा है। ऐसे ही और उलमा के कथन हैं। उस कुब्बे के ध्वस्त होने से षिया व सुन्नी मुसलमानों को कितना दुख हुआ इसका अनुमान ख़्वाजा हसन निज़ामी के बयान से होता है जो उन्होंने मासिक 'मुनादी' नई दिल्ली के दिसम्बर 1968 के अंक में ईरान व इराक़ के ज़ियारत नामे (दर्शन वृत्तान्त) में जब उन्होंने इमामे रिज़ा के रौज़े के हालात लिखने के बाद लिखा हैः

"यहाँ की हालत और विशेषता के साथ मदीने का ख़याल बन्ध जाता है। आँखों के सामने बक़ीअ का क़ब्रिस्तान आ जाता है। सब टूटा हुआ, सब बे साया, न गुम्बद, न क़ब्र की चादर, न फूल, न पेड़ों की छांव, न घास की दो पत्तियाँ।"

मेरी अक़्ल हैरान है, चक्कर में है कि जब रसूल हुजरे में आराम कर सकते हैं, जब रसूल के आराम की जगह पर गुम्बद बन सकता है, जब हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर कोठरी में दफ़्न हो सकते हैं और उनको वहाँ दफ़्न करने वाले सहाबी हैं सहाबी वे जिन्होंने इस्लाम को सीधे इस्लाम लाने वाले (रसूल) से सीखा, उन्होंने हुर्जों (कमरों/कोठरियों) के अन्दर इमारतों (भवनों) के नीचे दफ़्न होने में कोई बुराई नहीं देखते, फिर आज मक़बरों को ढाने और ध्वस्त करने का हक़ किसी को कैसे पहुँच जाता है। क्या ये क़ब्र तोड़ने वाले, सहाबियों से ज़्यादा दीन को समझ सकते थे? और क्या सहाबी इन लोगों के मुक़ाबले में कम दीनदार थे?

बात वास्तव में यह है कि अच्छाई और बुराई, सत्य और असत्य की लड़ाई कभी ख़त्म नहीं होती।

मक्के ओर ताएफ़ की तकलीफ़ें,
बद्र व उहद की चढ़ाइयाँ,
सिफ़्फ़ीन व करबला के संग्राम

वही सिलसिले का सिलसिला आज भी मौजूद है। मुहम्मद[स०] और मुहम्मद[स०] वालों को दुनिया के कठिन इम्तिहानों में सब्र का नमूना दिखाना है, जब भी दिखाया अब भी दिखा रहे हैं।

अल्लाह मदीने के गुम्बद को सलामत रखे, अगर उसका बनना और बाक़ी रहना जाएज़ है तो क्या कोई उस दुःख का अन्दाज़ा लगा सकता है जो इस हरे गुम्बद वाले को अपनी इकलौती लाडली बेटी और अपने चहेते नवासे हसन[स०] और दूसरे कितने ही प्यारों की टूटी क़ब्रों और बेसाया मज़ारों को देखकर होता होगा।

अल्लाह तआला उस दिन की सुबह किसी मुसलमान को नसीब न करे जिस दिन उसकी ज़बान या कार्य से रसूल[स०] को दुःख पहुँचे।

समाप्त

अली नक़ी नक़वी

जिन किताबों से सहायता ली गई हैः–

1. ख़िलाफत व इमामत
2. तारीख़े नज्द
3. अत्तौहीद अल्लज़ी होआ हक़्क़ुल्लाह अललअबीद – ईब्ने अब्दुल वहाब
4. मुस्लिम
5. बुख़ारी
6. नहजुलबलाग़ा
7. जोहरुल मुनज़्ज़म फ़ी ज़ियारति क़ब्रिन् नबीयि लमुकर्रम – अल्लामा ईब्ने हजर मक्की
8. अशरफुल वसायिल इला फ़हमि शिमायिल
9. हल्लुल मआक़िद हाशिया शरहे अक़ाइद –

मौलाना अब्दुल हलीम फ़िरंगी महली
10. दुररेकामना पहला भाग – इब्ने हजर मक्की
11. तारीख़ – ज़हबी
12. मिरातुलजिनान – याफ़ई
13. तारीख – अबुलफ़िदा
14. खुलासतुल मकाल फ़ी शदुदिररिहाल – सय्यद मुस्तफ़ा नूरूद्दीन हुसैन
15. इन्सानुल उयून – अली बिन बुरहानुद्दीन शाफ़ई
16. शिफ़ाउ सक़ाम फ़ी ज़्यारत ख़ैयरूल अनाम क़ाज़ी उल कुज़ात शेख हाफ़िज़ तक़ीउद्दीन सुब्बकी
17. मुन्तहिउल मिक़ाल फ़ी शरहे हदीसे ला तशददिररिहाल मुफ़्ती सदरूद्दीन
18. इतहाफ़ अहलुलइरफ़ान बरिवायत अम्बिया वल मलाएका वलजान – शेख़ मुहम्मद बरनसी
19. नसीमुर्रियाज़ शरहे शफ़ा काज़ी अय्याज़ – अहमद शहाबुद्दीन ख़िफ़ाजी
20. शरहे शिफ़ा – मुल्ला अली क़ारी
21. कश्फ़ुज़्ज़ुनून
22. मुसतदरक – हाकिम
23. मुअजम कबीर – तबरानी
24. मुअज़मे औसत – तबरानी
25. हिलयतुल औलिया – अबू नईम इस्फ़हानी
26. जामए कबीर – हाफ़िज़ सुयूती
27. खसाईसे कुबरा – हाफ़िज़ सयूती
28. दलाइल – बैहक़ी
29. तारीख़ – बुख़ारी
30. किताबुल मअरिफ़त – अबू नईम
31. शरहे दलाईले ख़ैयरात
32. नहजतुल महाफ़िल – इमादुद्दीन आमरी
33. दलाइलुन्नुबूवा – हाफ़िज़ अबू नईम
34. अलबयान वत्तबयीन – जाहिज़
35. उसदुलग़ाबा – इब्ने असीर जज़री
36. इस्तीआब – इब्ने अब्दुल बर
37. ज़ादुलमआद – इब्ने क़य्युम
38. तारीख़ – इब्ने ख़ल्लिकान
39. सुनन – इब्ने माजा
40. हाशिया सुनन इब्ने माजा – मुहद्दिस सुनदी
41. मुवाहिबे लदुन्निया – क़स्तलानी
42. हिस्ने हसीन – शम्सुद्दीन जज़री
43. जज़्बुल कुलूब – मुहद्दिस देहलवी शाह अब्दुल हक़
44. शिफ़ा – क़ाज़ी अय्याज़
45. औराक़े बग़दादिया – सैयद इब्राहीम रावी रिफ़ाई
46. वफ़ा – सम्हूदी
47. तज़किरतुस सामे वल मुतकल्लिम – शेख बद्रूद्दीन बिन इब्राहीम कक्आनी
48. अदबुल इमला वल इस्तिमला – अब्दुल करीम समआ़नी
49. मुहाज़िरतुल अबरार – शेख़ मुहयुद्दीन इब्ने अरबी
50. इसाबा – हाफ़िज़ इब्ने हजर
51. मुहाज़रतुल अवाएल
52. जमअ बैनस्सहीहैन
53. मुसनदे अहमद
54. सुनने इब्ने दाऊद
55. तारीख़े नज्द – आलूसी
56. तफ़्सीरे कबीर – इमाम राज़ी
57. किताबुल आलिम वल मुतअल्लिम – इमाम अबूहनीफ़ा
58. जामए कबीर – जलालुद्दीन सुयूती
59. अमलूल्यौम वल्लैला – हाफ़िज़ अबू नईम अस्फ़हानी
60. किताबुददावात – हा0 जलालुददीन सुयूती
61. ख़ैराते हिसान फ़ि मनाक़िबि – अबू हनीफ़ा अन्नुमान इब्ने हजर अस्क़लानी
62. बानीए दरसे निज़ामी – मुफ़्ती मुहम्मद रिज़ा अन्सारी
63. फतवा फ़ी जवाज़े या – शेख़ अब्दुल क़ादिर
64. यनाबीउल मुवददा – शेख सुलैमान बलख़ी
65. किफ़ाया – शेबी
66. फ़तावाए ग़राएब
67. मतालिबुल मोमिनीन

68. ख़ज़ानतुर्रिवाया
69. अबजदुल उलूम – नवाब सिददीक़ हसन ख़ाँ क़न्नौजी
70. महवुल हूबा फ़ी शरहे अबयातिततौबा – सनआई मुहम्मद बिन इस्माईल
71. रद्दुल मुख्तार – सैयद मुहम्मद अमीन बिन उमर 'इब्न आबिदीन'
72. तौज़ीह – सुलेमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब
73. अल हिस्न वल जुन्ना अला अक़ीदति अहलुस्सुन्ना – शैख मुहम्मद यूसुफ़ "काफ़ी"
74. शरहत् तौहीद
75. कश्फ़ुश्शुबहात फ़ी तशकीक बिल मुशाबहात – मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब
76. कश्लुल अवाब
77. ज़ादुलमआद
78. वफ़ाउलवफ़ा
79. सवाएकुल मुहर्रिक़ा – अल्लामा इब्ने हजर
80. औराक़े बग़दादिया
81. मआलिमुत्तनज़ील – बग़वी
82. लुबाबुत्तावील – ख़ाज़िन
83. तफ़्सीरे जलालैन
84. कश्शाफ़
85. अबुस्सऊद
86. तन्वीरूल मिक्बार – इब्ने अब्बास
87. ग़राएबुल कुरान
88. शरहे सहीह मुस्लिम – नूदी
89. सिराते मुस्तक़ीम – शैख़ तक़ीउद्दीन इब्ने तैमिया
90. अल अदलुश्शाहिद फ़ी तहक़ीक़िल मुशाहिद – उस्मान बिन बददाख शाफ़िई
91. फ़स्लुल ख़िताब – मुहद्दिस ख्वाजा पारसा
92. रिसाला उम्मुल कुरा 4 जमादिउल ऊला 1345 हि0 – अब्दुल्लह बिन सुलैमान
93. उम्दतुत्तालिब – जमालुददीन ऐनीया
94. हबीबुस्सियर
95. कामिल – इब्ने असीर
96. रौज़तुस्सफ़ा
97. तारीखुल खुलफ़ा – सुयूती
98. शरहे मिष्कात
99. मजमउल बिहार – मुहद्दिस मुहम्मद ताहिर कुतनी
100. वसाइलुश्शिया – शेख हुर्रे आमिली
101. मिस्बाहुल मुनीर – फ़ितूनी
102. तफ़सीर रूहुल मआनी
103. जहरूर्रिबा – हाफ़िज़ सुयूती
104. तफ़सीरे बैज़ावी
105. हाषिया सुनने निसाई – अल्लामा सिन्दी मदनी
106. कुनूज़ुल हक़ाएक़ – मुनादी
107. फ़त्हुल बारी
108. इहयाउल उलूम – ग़िज़ाली
109. निहाया – इब्ने असीर
110. अल इ'लाम बैतुल्लाहिर्रल हराम
111. तोहफ़तुल बारी
112. इरशादुस्सारी
113. क़िताबुल इलल वस्सुआलात – अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल
114. मुस्तदरकुल मसाइल – अल्लामा नूरी
115. सिहाहे जौहरी
116. तहज़ीब
117. क़ामूसुल अम्किना वल् बकाअ
118. खुलासतुल कलाम
119. बिहारुल अनवार – अल्लामा मजालिसी
120. मिफ़्ताहुल किरामा – सैयद मुहम्मद जवाद आमली
121. तारीखे अजाइबुत असर – ज्रबरती
122. नूरुल अबसार
123. इस्आफ़ुल राग़िबीन – मुहम्मद बिन हय्यान
124. अख़बारुल अव्वल – अबुल अब्बास अहमद बिन यूसुफ़ दस्ती
125. आसारुल अव्वल – अबुल अब्बास अहमद बिन यूसुफ़ दस्ती
126. किताबुल इस्तीआब – इब्ने अब्दुल बर
127. रिसालाए मुनादी दिसम्बर 1968 – ख़्वाजा हसन निज़ामी नई दिल्ली